I J C R M
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान द्वारा भारत के खिलाफ सूचना युद्धकर्म का प्रयोग: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. अमित त्रिपाठी *

असिस्टेंट प्रोफेसर, ए.एन.डी.के.पी.जी. कॉलेज, बभनान, गोंडा, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: *डॉ. अमित त्रिपाठी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18287423

सारांश

2025 में भारत और पाकिस्तान के बीच सीमित सैन्य संघर्ष के दौरान सूचना युद्धकर्म (Information Warfare) एक निर्णायक रणनीतिक उपकरण के रूप में उभरा। दोनों देशों ने साइबर हमलों, सोशल मीडिया अभियानों, फेक न्यूज़, और मनोवैज्ञानिक अभियानों का प्रयोग कर न केवल सैन्य रणनीति को प्रभावित किया, बल्कि जनमत और अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण को भी आकार देने का प्रयास किया। यह शोध पत्र इस संघर्ष के दौरान पाकिस्तान द्वारा प्रयुक्त सूचना युद्धकर्म की रणनीतियों और उनके प्रभावों का वर्णन व विश्लेषण करता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 09-11-2025
- **Accepted:** 13-12-2025
- **Published:** 18-01-2026
- **IJCRM:**5(1); 2026: 121-125
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

अमित त्रिपाठी. ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान द्वारा भारत के खिलाफ सूचना युद्धकर्म का प्रयोग: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(1):121-125.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: फाल्स फ्लैग ऑपरेशन, सूचना युद्धकर्म, प्रोपेगेंडा, साइकोलॉजिकल वॉरफेयर, एयर डिफेंस, काउंटर स्ट्रैटेजी

© 2026 डॉ. अमित त्रिपाठी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

सूचना युद्धकर्म (Information Warfare) आधुनिक सैन्य रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है। इसमें साइबर हमले, दुष्प्रचार, मनोवैज्ञानिक युद्ध और मीडिया के माध्यम से जनमत को प्रभावित करने की रणनीतियां शामिल होती हैं। अब किसी भी लड़ाई को जीतने के लिए ये जरुरी है कि पारंपरिक मिलिट्री ऑपरेशन के साथ-साथ सूचना संसार में भी मजबूती से लड़ाई लड़ी जाये जिसके लिए फेक नैरेटिव को एक्सपोज करने, सही तथ्यों को सामने लाने और जनता के मनोबल को प्रभावित करने वाले कारकों को अपने ढंग से नियंत्रित करने की आवश्यकता होती है। वर्ष 2025 के मई महीने में चार दिन तक चले भारत-पाकिस्तान सैन्य-संघर्ष के दौरान भी सूचना संसार में इन्फॉर्मेशन वॉरफेयर का व्यापक प्रयोग देखने को मिला। भारत और पाकिस्तान दोनों ही पक्षों की ओर से इसका प्रयोग किया गया जिससे विपक्षी सेना और जनता के मनोबल को प्रभावित किया जा सके।

प्रस्तुत शोधपत्र में भारत के ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान द्वारा भारत के खिलाफ छेड़े गये इन्फॉर्मेशन वॉरफेयर के प्रयोग का संक्षिप्त वर्णन और विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य संघर्ष के दौरान प्रयुक्त सूचना-आधारित रणनीतियों, तकनीकों और माध्यमों की पहचान करना है। साथ ही, इस संघर्ष के दौरान पाकिस्तान द्वारा फैलाई गई गलत सूचनाओं, भ्रामक कथनों और मनोवैज्ञानिक अभियानों का भारतीय समाज के साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पड़ने वाले प्रभावों का आकलन व विश्लेषण करना भी इस शोधपत्र का एक अहम लक्ष्य है।

2. साहित्य की समीक्षा

"सूचना युद्धकर्म" की अवधारणा का विकास 20वीं सदी के उत्तरार्ध में हुआ, जब सैन्य अभियानों में सूचना के नियंत्रण और उपयोग को एक रणनीतिक हथियार के रूप में देखा जाने लगा। "सूचना युद्ध" शब्दावली का पहली बार प्रयोग वर्ष 1970 में डेल माइनर ने अपनी किताब "द इन्फॉर्मेशन वॉर" में किया थी। हालांकि, सैन्य-सन्दर्भ में "सूचना-युद्ध" शब्दावली का पहली बार प्रयोग करने का श्रेय थॉमस पी. रोना को दिया जाता है। बोइंग कंपनी के लिए काम करते हुए 1976 में "वीपन सिस्टम्स एंड इन्फॉर्मेशन वॉर" (Weapon Systems and Information War) शीर्षक के तहत तैयार रिपोर्ट में रोना ने इसका उल्लेख किया था। एडवर्ड वॉल्ट्ज ने 1998 में प्रकाशित अपनी पुस्तक इन्फॉर्मेशन वॉरफेयर: प्रिंसिपल्स एंड ऑपरेशंस (Information Warfare: Principles and Operations) में सूचना युद्कर्म के विभिन्न पहलुओं का उल्लेख किया है।

भारत और पाकिस्तान के बीच हुए पूर्ववर्ती संघर्षों (जैसे 1999 का कारगिल युद्ध) में भी सूचना नियंत्रण की भूमिका देखी गई थी। इसी प्रकार वर्ष 2016 की सर्जिकल स्ट्राइक और 2019 के बालाकोट हमले के बाद भारत द्वारा पाकिस्तान पर की गई एयर स्ट्राइक के दौरान भी सोशल मीडिया पर विभिन्न प्रकार के नैरेटिव कैम्पेन देखने को मिले थे। मई 2025 के संघर्ष में यह पहली बार था जब दोनों देशों ने इन्फॉर्मेशन वॉरफेयर के तहत डिजिटल माध्यमों और सोशल मीडिया का व्यापक उपयोग किया।

"सूचना युद्ध" पर कई वैश्विक अध्ययन उपलब्ध हैं, परंतु 2025 के भारत-पाकिस्तान संघर्ष में इसके विशिष्ट प्रयोग पर सीमित शोध हुआ है। यह अध्ययन भारतीय दृष्टिकोण से इस शून्य को भरने का प्रयास करता है, जिससे भविष्य की सैन्य रणनीतियों में सूचना युद्ध की भूमिका को बेहतर ढंग से समझा जा सके।

3. अनुसंधान पद्धति

इस अध्ययन में संघर्ष के दौरान पाकिस्तान द्वारा छेड़े गये इन्फॉर्मेशन वॉरफेयर के विभिन्न रूपों, रणनीतियों और प्रभावों का वर्णन तथा विश्लेषण करने के लिए गुणात्मक और आंशिक रूप से मात्रात्मक अध्ययन पद्धति का उपयोग किया गया है।

शोधकार्य को पूर्ण करने हेतु सेकेंडरी डेटा का इस्तेमाल किया गया है। डेटा संग्रह के लिये समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं, विभिन्न थिंक टैंक व समाचार माध्यमों की आधिकारिक वेबसाइटों, सरकारी वेबसाइटों, सोशल मीडिया पोस्ट, वायरल चित्रों, सूचनाओं व वीडियो आदि का उपयोग किया गया है।

सैन्य संघर्ष की संक्षिप्त पृष्ठभूमि:

भारत के केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल, 2025 को एक बर्बर आतंकवादी हमला हुआ। तीन पाकिस्तानी आतंकवादियों ने पहलगाम की बैसरन घाटी में मौजूद पर्यटकों से पहले उनका धर्म पूछा और फिर उनकी हत्या कर दी। इस कायराना आतंकी हमले में 25 पर्यटकों और एक स्थानीय नागरिक की जान चली गई। यह स्पष्ट रूप से सांप्रदायिक हिंसा भड़काने और सीमा पार से होने वाले हमलों से लेकर भारत को अंदर से विभाजित करने की दिशा में एक प्रयास था। खुद को द रेजिस्टेंस फ्रंट (TRF) कहने वाले एक ग्रुप ने इस हमले की ज़िम्मेदारी ली। यह ग्रुप संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिबंधित पाकिस्तानी आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा का एक अंग है।[1]

इस हमले के खिलाफ अपने जवाब में 7 मई, 2025 को भारत ने पाकिस्तान के आतंकी ठिकानों को नष्ट करने के लिए ऑपरेशन सिंदूर शुरू किया। इस दौरान पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में कुल नौ आतंकवादी ठिकानों पर मिसाइलों से हमले किए गये। ऑपरेशन सिंदूर का फोकस आतंकवादी इंफ्रास्ट्रक्चर को खत्म करना और भारत भेजे जाने वाले आतंकवादियों को बेअसर करना था। भारत की कार्रवाई लक्ष्य केंद्रित, सोची-समझी और बिना उकसावे वाली थी। हालांकि, पाकिस्तान ने इस ऑपरेशन के बाद 8 मई की सुबह, ड्रोन और मिसाइल से भारत के कुछ सैन्य अड्डों के अलावा भारतीय नागरिक इलाकों को भी निशाना बनाने की कोशिश की। इन हमलों में जिन शहरों को निशाना बनाया गया उनमें श्रीनगर, जम्मू, पठानकोट, अमृतसर, लुधियाना, बठिंडा और भुज शामिल थे। भारत के मज़बूत इंटीग्रेटेड काउंटर-ड्रोन ग्रिड और लेयर्ड एयर डिफेंस सिस्टम ने इन हमलों को रोक दिया।[2]

पाकिस्तान की इन उकसावे वाली कार्रवाइयों का भारतीय सेना ने कड़ा और निर्णायक जवाब दिया, जिससे पाकिस्तानी सेना को काफी नुकसान हुआ। 9 और 10 मई, 2025 की रात को भारत का जवाबी हमला एक ऐतिहासिक मील का पत्थर बन गया, जब पहली बार किसी देश ने परमाणु हथियार संपन्न राष्ट्र के हवाई ठिकानों पर सफलतापूर्वक हमला किया। महज तीन घंटे के अंदर भारत ने नूर खान समेत 11 सैन्य ठिकानों रफीकी, मुरीद, सुक्कुर, सियालकोट, पसरूर, चुनियन, सरगोधा, स्कर्दू, भोलारी और जकोबाबाद को निशाना बनाया। जकोबाबाद में शाहबाज एयरबेस पर हमले से पहले

© 2026 डॉ. अमित त्रिपाठी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

और बाद की सैटेलाइट तस्वीरें विनाश के पैमाने को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं। इस हमले में सरगोधा और भोलारी जैसे प्रमुख गोला-बारूद डिपो तथा एयरबेस को निशाना बनाया गया, जहां पाकिस्तान के एफ-16 व जेएफ-17 लड़ाकू विमान तैनात थे। परिणामस्वरूप, पाकिस्तान की वायु सेना का लगभग 20% बुनियादी ढांचा नष्ट हो गया।[3]

इसके बाद, 10 मई 2025 को, पाकिस्तान के मिलिट्री ऑपरेशन्स के डायरेक्टर जनरल ने अपने भारतीय समकक्ष से फायरिंग और सैन्य कार्रवाइयां रोकने का निवेदन किया, जिसके बाद भारतीय पक्ष संघर्ष विराम के लिए तैयार हो गया।

भारत-पाक संघर्ष (2025) के दौरान पाकिस्तान द्वारा सूचना युद्धकर्म के प्रयोग के कुछ उदाहरण –

पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान अधिक्रांत जम्मू-कश्मीर (PoJK) के साथ ही पाकिस्तानी क्षेत्र में गहराई तक मौजूद आतंकवादी ठिकानों को निशाना बनाया। भारत के तीनों सेनाओं के अद्भुत सहयोग, सटीक कार्रवाई, प्रोफेशनल दक्षता और इरादों की स्पष्टता के कारण इस सफल कार्रवाई से पाकिस्तान का समूचा रक्षा तंत्र आश्चर्य में पड़ गया। इसके साथ ही सही तथ्यों को छिपाने और गलत सूचनाओं को प्रसारित करने का पाकिस्तानी सरकार और सेना का अभियान शुरु हुआ। इस अभियान को हम निम्नलिखित उदाहरणों से समझ सकते हैं –

उदाहरण 1:

ऑपरेशन सिंदूर के तहत 7 मई को पाकिस्तान और पीओजेके (PoJK) में मौजूद कुल नौ आतंकवादी ठिकानों पर की गई भारतीय सेना की कार्रवाई के बाद पाकिस्तान ने दावा किया कि भारतीय सेना ने पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले जम्मू-कश्मीर के छह शहरों पर हमला किया जिसमें 31 आम नागरिक मारे गए। भारतीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इस दुष्प्रचार को खारिज करते हुए कहा कि भारतीय सेना ने आम नागरिकों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया। इंडियन एयर फ़ोर्स की विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने आधिकारिक प्रेस वार्ता के दौरान पुन: स्पष्ट किया कि भारत के हमलों से (नागरिकों को) "कोई बड़ा नुकसान नहीं हुआ" और यह हमला "सटीकता" से किया गया था।[4]

उदाहरण 2:

पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने अन्तर्राष्ट्रीय मीडिया के साथ बातचीत में बार-बार ये दोहराया कि 22 अप्रैल, 2025 को पहलगाम में हुआ आतंकवादी हमला दरअसल "भारत का एक फाल्स फ्लैग ऑपरेशन (false flag operation) था।" पाकिस्तान के अन्य नेताओं, पत्रकारों और आम पाकिस्तानियों ने भी सोशल मीडिया में लगातार इस झूठ को फैलाने की कोशिश की और भारत पर आरोप लगाये कि इसका मकसद पाकिस्तान को बदनाम करना था। इसके बाद एआई से बने मीम इस्तेमाल करने वाले बॉट नेटवर्क और सरकारी मीडिया ने भी इन झूठे दावों को लगातार बढ़ावा दिया।[5]

पाकिस्तान के इन दावों की पोल संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की आपातकालीन बैठक के दौरान खुल गई। विभिन्न समाचार माध्यमों ने विश्वस्त सूत्रों से मिली जानकारी के आधार पर इस सूचना को प्रकाशित/प्रसारित किया कि यूनाइटेड नेशंस सिक्योरिटी काउंसिल के सदस्यों ने पाकिस्तान के ही आग्रह पर बुलाई गई बैठक, जो कि बंद दरवाज़े के भीतर हुई, में पाकिस्तान के फाल्स फ्लैग ऑपरेशन वाले दावे को खारिज कर दिया और पाकिस्तानी प्रतिनिधि से कड़े सवाल पूछे। सदस्यों ने पाकिस्तान के तरफ से फैलाई गई "झूठी बातें" मानने से इनकार कर दिया और पूछा कि क्या लश्कर-ए-तैयबा, जो एक प्रतिबंधित आतंकी संगठन है और जिसके पाकिस्तान से गहरे संबंध हैं, इस आतंकी हमले में शामिल हो सकता है।[6]

उदाहरण 3:

ऑपरेशन सिंदूर के जवाब में पाकिस्तानी अधिकारियों ने यह दावा करना शुरू कर दिया कि उन्होंने पांच भारतीय फाइटर जेट मार गिराए हैं। यह बात सोशल मीडिया पर तेज़ी से फैल गई। पाकिस्तान के लिए एक बड़ी शर्मिंदगी की बात तब हुई जब सीएनएन (CNN) के साथ एक इंटरव्यू में पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने भी यही दावा किया कि पाकिस्तानी सेना ने पांच भारतीय फाइटर जेट मार गिराए हैं। चैनल की एंकर ने जब इस दावे का आधार पूछा तो ख्वाजा आसिफ ने सोशल मीडिया को इस सूचना का एकमात्र सोर्स बता दिया। उन्होंने कहा, "यह सब सोशल मीडिया पर है, भारतीय सोशल मीडिया पर, हमारे नहीं।" उन्होंने आगे कहा कि, "इन जेट का मलबा कश्मीर (उनके मुताबिक भारतीय क्षेत्र) में गिरा। यह आज पूरे भारतीय मीडिया में है, और उन्होंने इसे मान लिया है।" एंकर ने तुरंत कहा, "मुझे माफ कीजिये, हमने आपसे यहां सोशल मीडिया कंटेंट के बारे में बात करने के लिए नहीं कहा था।" जब उनसे और खास बातें पूछी गईं— जैसे कि भारतीय जेट को मार गिराने के लिए इस्तेमाल किया गया एयरक्राफ्ट या कोई वेरिफाइड सबूत— तो आसिफ कोई पक्की जानकारी नहीं दे पाए।[7]

उदाहरण 4:

पाकिस्तान सेना के प्रवक्ता अहमद शरीफ चौधरी ने भी ये दावा किया कि पाकिस्तान की वायुसेना ने पांच भारतीय जेट विमान मार गिराए हैं। इस दावे से सम्बन्धित सूचना को चीन सरकार के मुखपत्र ग्लोबल टाइम्स द्वारा प्रकाशित किये जाने पर बीजिंग स्थित भारतीय दूतावास ने इसे पूरी तरह खारिज कर दिया। साथ ही ग्लोबल टाइम्स की रिपोर्ट की आलोचना करते हुए उसे "गलत जानकारी" बताया।

उदाहरण 5:

पाकिस्तान के साथ-साथ भारतीय सोशल मीडिया में भी एक तस्वीर तेजी से वायरल हुई जिसे पाकिस्तान द्वारा बहावलपुर के पास मार गिराये गये एक भारतीय राफेल जेट के मलबे के सबूत के रूप में प्रचारित किया गया। भारत की प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो (PIB) की फैक्ट चेक टीम ने इस तस्वीर का विश्लेषण कर सही जानकारी दी। दरअसल वायरल हुई तस्वीर पंजाब के मोगा में वर्ष 2021 में हुए दुर्घटनाग्रस्त हुए एक मिग-21 विमान की थी। इस तस्वीर का ताजा घटनाओं से कोई लेना-देना नहीं था।[8]

उदाहरण 6:

पाकिस्तान सरकार से जुड़े कुछ ऑफिशियल एक्स (X) अकाउंट के माध्यम से दावा किया गया कि भारतीय सैनिकों ने लाइन ऑफ़ कंट्रोल

© 2026 डॉ. अमित त्रिपाठी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

(LoC) पर मौजूद एक मिलिट्री पोस्ट पर सरेंडर के लिए सफ़ेद झंडा फहराया। इससे सम्बन्धित एक वीडियो भी वायरल किया गया और दावा किया गया कि भारतीय सैनिकों ने चोरा पोस्ट पर सफेद झंडा फहराया और सरेंडर कर दिया। पाकिस्तान के इन्फॉर्मेशन और ब्रॉडकास्टिंग मिनिस्टर अताउल्लाह तरार ने भी इस मनगढ़ंत फुटेज का सार्वजनिक रूप से समर्थन किया, जिसके जरिये एक साफ तौर पर झूठी और बिना वेरिफाइड कहानी को आधिकारिक तौर पर बल देने की कोशिश की गई। पाकिस्तान की ओर से किया जा रहा ये दुष्प्रचार खुद ही सवालों के घेरे में आ गया। इसकी वजह ये थी कि जब भारत और पाकिस्तान में से किसी ने भी युद्ध की कोई घोषणा नहीं की और न ही किसी भी पक्ष की सेना ने नियंत्रण रेखा या अन्तर्राष्ट्रीय सीमा को पार किया, फिर आत्मसमर्पण करने का प्रश्न ही अतार्किक और स्वत: ही सफेद झूठ साबित हो जाता है।

उदाहरण 7:
पाकिस्तान समर्थक सोशल मीडिया हैंडल्स ने दावा किया कि भारतीय महिला एयरफ़ोर्स पायलट, स्क्वाड्रन लीडर शिवानी सिंह को पाकिस्तान में पकड़ लिया गया है। भारतीय प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो की फैक्ट चेक यूनिट ने इस प्रकार की खबरों का खण्डन किया और स्पष्ट किया कि ये सूचना पूरी तरह मनगढ़ंत और झूठ है।[9]

उदाहरण 8:
पाकिस्तान समर्थक सोशल मीडिया हैंडल्स ने ये दावा किया कि JF-17 फाइटर जेट से दागी गई हाइपरसोनिक मिसाइलों ने आदमपुर में भारत के S-400 एयर डिफेंस सिस्टम को तबाह कर दिया। इस दावे के पक्ष में एक फोटो भी वायरल की गई जिसमें एक नष्ट किया गया S-400 एयर डिफेंस सिस्टम नजर आ रहा था। भारतीय प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो की फैक्ट चेक यूनिट ने इस झूठ का भी पर्दाफाश किया। भारतीय सेना की प्रवक्ता ने भी स्पष्ट किया कि इस प्रकार के दावे पूरी तरह गलत हैं। दरअसल वायरल की गई तस्वीर में रूस का एक S-400 मिसाइल डिफेंस सिस्टम दिखाया गया था जिसे 2024 में यूक्रेन ने नष्ट कर दिया था।[10]

पाकिस्तान संचालित सूचना युद्धकर्म के प्रभावों की विवेचना
भारतीय सेनाओं द्वारा संचालित ऑपरेशन सिंदूर के दौरान फेक नैरेटिव और प्रोपेगेंडा के जरिये पाकिस्तान ने दो लक्ष्यों को साधने की कोशिश की। एक तरफ, पाकिस्तान की जनता के बीच वहां की कठपुतली सरकार और सेना की साख को बचाने की कोशिश की गई। दूसरी तरफ, विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स की अन्तर्राष्ट्रीय पहुंच का लाभ उठाकर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भारतीय जनता और सेनाओं के मनोबल को प्रभावित करने की कोशिश पाकिस्तान ने की।

पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद सबसे पहले पाकिस्तान ने ये जताने की कोशिश की कि इसमें उसका कोई हाथ नहीं। भारत पर फाल्स फ्लैग ऑपरेशन करने जैसे मनगढ़ंत आरोप लगाने से कोई लाभ नहीं हुआ तो पाकिस्तान ने रणनीति बदली। भारतीय सैन्य कार्रवाई से दहल रहे पाकिस्तानी सत्ता प्रतिष्ठान और सेना ने ये दिखाने की कोशिश की कि भारत की कार्रवाई का उस पर कोई ज्यादा असर नहीं है। निरंतर मनगढ़ंत दावे करके पाकिस्तानी पक्ष ने अफवाहों, झूठे दावों और फर्जी आरोपों का घना कोहरा बनाने की कोशिश की जिससे भारतीय सेना का मुकाबला करने में मिल रही नाकामी को छिपाया जा सके।

भारत में सरकार और सेना ने इस प्रकार के दुष्प्रचार से निपटने की तैयारी पहले से की थी। ऑपरेशन सिंदूर को शुरु करने से पहले ही बहुत से पाकिस्तानी एक्स एकाउंट, यूट्यूब चैनल आदि भारत में प्रतिबंधित किये गये थे। सैन्य कार्रवाई के दौरान भी भारत के खिलाफ प्रोपेगेंडा फैलाने में लगे ऐसे सोशल मीडिया हैंडल्स और अकाउंट्स को प्रतिबंधित किया गया। इसके साथ ही, भारतीय समाचार चैनलों, प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो, विभिन्न न्यूज वेबसाइट्स, सरकारी और निजी सोशल मीडिया अकाउंट्स और भारतीय सेना की आधिकारिक प्रेस वार्ताओं के माध्यम से पाकिस्तान के दुष्प्रचार के प्रभाव को कम करने की लगातार कोशिशें की गईं। फिर भी, तेजी से बदलते घटनाक्रमों के बीच कई बार ऐसी स्थिति बनी जिसमें भारतीय जनता में भ्रम और असमंजस की स्थिति बनी। भारत के पाकिस्तान से लगते सीमावर्ती क्षेत्रों में इसका असर बाकी देश के मुकाबले कुछ ज्यादा महसूस किया गया।

4. निष्कर्ष
ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारतीय सेनाओं द्वारा पाकिस्तान के खिलाफ की गई कार्रवाई प्रभावी, निर्णायक, स्पष्ट संदेश देने वाली और ऐतिहासिक थी। ऑपरेशन सिंदूर ने दक्षिण एशिया के भू-राजनीतिक और सामरिक परिदृश्य को एक नया आकार दिया है। यह केवल एक सैन्य अभियान नहीं था, बल्कि भारत की संप्रभुता, संकल्प और वैश्विक प्रतिष्ठा का बहुआयामी शंखनाद था। इस दौरान अपनी असफलताओं को छिपाने के लिए पाकिस्तान ने जो दुष्प्रचार अभियान चलाया, भारत ने विभिन्न स्तरों पर त्वरित और उचित कार्रवाई करते हुए पाकिस्तानी प्रोपेगेंडा कैम्पेन का सफलतापूर्वक मुकाबला किया। तेजी से बदलते घटनाक्रमों के बीच विभिन्न स्तरों पर, विभिन्न तरीकों से फैलाये जा रहे झूठ का पर्दाफाश करके भारत ने न केवल अपनी जनता के बीच भ्रम और अफवाहों को फैलने से रोका, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पाकिस्तान को बेनकाब करके सैन्य कार्रवाई करने के फैसले को सही साबित करने में सफलता प्राप्त की।

5. सुझाव
भविष्य में, इस प्रकार की परिस्थितियों के निर्मित होने पर निम्नलिखित दो सूझावों पर अमल करने से अपनी स्थिति को और मजबूत बनाया जा सकता है-

1. समाचार चैनलों को निर्देशित किया जाये कि इस प्रकार की परिस्थितियों में भारतीय प्रेस ब्यूरो की फैक्ट चेक टीम द्वारा जारी प्रत्येक सूचना को अवश्य प्रसारित करें।
2. पीआईबी (PIB) के सोशल मीडिया हैंडल्स से पोस्ट की जा रही जानकारी को विभिन्न सरकारी मंत्रालयों, विभागों, शैक्षणिक संस्थाओं आदि के सोशल मीडिया हैंडल्स द्वारा भी अवश्य शेयर किया जाये जिससे सम्बन्धित जानकारी तेजी से समाज के प्रत्येक स्तर तक पहुंच सके।

© 2026 डॉ. अमित त्रिपाठी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

संदर्भ सूची

1. Misri V. Statement by Foreign Secretary: Operation SINDOOR [Internet]. New Delhi: Ministry of External Affairs; 2025 May 7. Available from: https://www.mea.gov.in/Speeches-Statements.htm?dtl/39473
2. Consulate General of India, Istanbul. Summary of Operation SINDOOR [Internet]. Istanbul: CGI; 2025 May 10. Available from: https://www.cgiistanbul.gov.in/section/news/summary-of-operation-sindoor/
3. Kumar S, Kataria R, Rane K. Operation Sindoor: India's strategic clarity and well-planned military action [Internet]. New Delhi: Press Information Bureau, Government of India; 2025 May 14. Available from: https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2129014&reg=3&lang=2
4. Siddiqui U. Information war: are India and Pakistan telling the truth about attacks? [Internet]. Doha: Al Jazeera; 2025 May 7. Available from: https://www.aljazeera.com/news/2025/5/7/information-war-are-india-or-pakistan-telling-the-truth-about-attacks
5. Amours JK. Kashmir updates: Pakistan claims Pahalgam attack 'false flag operation' [Internet]. Doha: Al Jazeera; 2025 Apr 24. Available from: https://www.aljazeera.com/news/liveblog/2025/4/24/kashmir-attack-live-india-summons-pakistani-envoy-hunts-pahalgam-gunmen
6. Pahalgam terror attack: UNSC refuses to accept 'false flag' theory, questions Pakistan on LeT involvement [Internet]. New Delhi: Business Today; 2025 May 6. Available from: https://www.businesstoday.in/india/story/pahalgam-terror-attack-unsc-refuses-to-accept-false-flag-theory-questions-pakistan-on-let-involvement-474815-2025-05-06
7. "It's all over social media": Pakistan defence minister fails to justify claim of downing Indian jets [Internet]. New Delhi: DD News; 2025 May 8. Available from: https://ddnews.gov.in/en/its-all-over-social-media-pakistan-defence-minister-fails-to-justify-claim-of-downing-indian-jets/
8. "It's all over social media": Pakistan defence minister fails to justify claim of downing Indian jets [Internet]. New Delhi: DD News; 2025 May 8. Available from: https://ddnews.gov.in/en/its-all-over-social-media-pakistan-defence-minister-fails-to-justify-claim-of-downing-indian-jets/
9. Pro-Pakistan handles claim Indian woman pilot captured; PIB fact checks [Internet]. New Delhi: Hindustan Times; 2025 May 10. Available from: https://www.hindustantimes.com/india-news/centre-refutes-claim-that-indian-female-pilot-has-been-captured-by-pakistan-101746860325900.html
10. Pakistan's claim of destroying India's S-400 missile systems false: Indian military [Internet]. Chennai: The Hindu; 2025 May 10. Available from: https://www.thehindu.com/news/national/pakistans-claim-of-destroying-indias-s-400-missile-systems-false-indian-military/article69560019.ece

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Author

डॉ. अमित त्रिपाठी, उत्तर प्रदेश के गोंडा ज़िले स्थित ए.एन.डी.के. पी.जी. कॉलेज, बभनान, गोंडा, उत्तरप्रदेश में सहायक प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। वे आतंकवाद 3.0 (2020) शीर्षक पुस्तक के लेखक हैं। उनका विशेषज्ञता क्षेत्र आतंकवाद एवं मीडिया है। अब तक उनके एक दर्जन से अधिक शोध पत्र प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं और वे अपने विषय क्षेत्र में निरंतर सक्रिय रूप से शोध कार्य में संलग्न हैं।

© 2026 डॉ. अमित त्रिपाठी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/